विशारद प्रथम वर्ष
गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180
क्रियात्मक : 250 (क्रिया : 200 + मंच प्रदर्शन : 50) न्यूनतम : 128
शास्त्र : 150 न्यूनतम : 52

शास्त्र :

प्रश्नपत्र सं. १

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता–विभिन्नता का अध्ययन। स्वर समुदाय से राग पहचानना।

२) पाठ्यक्रम की निम्नलिखित सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें पं. विष्णू दिगंबर एवम् पं. भातखंडे पद्धति में लिखने का अभ्यास। दुगुन तिगुन चौगुन लयकारी में लिखने का अभ्यास।
   (१) आड़ाचौताल, (२) झूमरा,
   (३) दीपचंदी, (४) पंजाबी

३) पाठ्यक्रम के रागों की बंदिशों को/गतों को विष्णु दिगंबर एवम् भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता।

४) आधुनिक आलाप गान एवम् प्राचीन आलाप गान की विधि का विस्तृत विवेचन।

५) तानों के प्रकार और उनका विस्तृत अध्ययन।

६) निबद्ध गान के विविध प्रकारों का पूर्ण विवेचन।
   धृपद, धमार, तराना, टप्पा, ठुमरी, ख्याल।

प्रश्नपत्र सं. २

७) गणित के आधार पर पं. व्यंकटमखी के 72 मेलों की रचना की विधि।

८) थाट – पद्धति का प्राचीन से आधुनिक काल तक का विवेचन तथा थाट पद्धति के गुणदोष।

९) रागों का समय–चक्र और रागों के विभाजन के तीन वर्गों की विस्तृत जानकारी।

१०) गायक / वादकों का सांगीतिक योगदान :-

अल्लादिया खाँ, विनायकराव पटवर्धन, श्री. ना. रातंजनकर, अल्लाउद्दीन खाँ, ओंकारनाथ ठाकुर, निखिल बॅनर्जी, बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, बिसमिल्ला खाँ।

११) निम्नलिखित विषयों में निबंध लिखने की क्षमता :-

१) ललित कलाओं में संगीत का स्थान।

२) चित्रपट (चलचित्र) संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव।

३) शास्त्रीय संगीत : कल, आज और कल।

४) शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्त्व।

१२) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।

क्रियात्मक :

१) इस वर्ष में ख्यालगायन/वादन की शैली में विकास होना अपेक्षित है।

२) राग का अपने मन से आलाप तानों द्वारा विस्तार करना अपेक्षित है।

३) अल्पत्त्व - बहुत्त्व तथा अविर्भाव - तिरोभाव का गायन वादन मे प्रयोग करना अपेक्षित है।

अ) रागज्ञान :

विस्तृत अध्ययन के लिए :

(१) गौडसारंग, (२) शंकरा, (३) जयजयवंती, (४) पूरियाधनाश्री, (५) हमीर, (६) कामोद

हर एक राग में एक - एक विलंबित तथा एक - एक द्रुत ख्याल / एक - एक मसीतखानी तथा एक - एक रजाखानी गत तैय्यार करनी है।

साधारण ज्ञान के लिए :

(१) मियाँ मल्हार (२) मुलतानी (३) मारूबिहाग
(४) पूरिया (५) शुद्ध कल्याण (६) दरबारी कानडा
(७) बहार

हर एक राग में मध्य लय की बंदिशें/गतें 15 मिनट तक आलाप तान/ तोड़ों सहित गाने/बजाने की क्षमता होनी चाहिए।

इस वर्ष के रागों में एक ध्रुपद, एक धमार, दो तराने तथा एक चतुरंग या त्रिवट इस प्रकार 5 अन्य बंदिशे तैय्यार करनी है। वादन के विद्यार्थी इनकी रचनाएँ विभिन्न तालों में तैय्यार करेंगे - रूपक झपताल, एकताल, आड़ा चौताल, दीपचंदी।

उपशास्त्रीय संगीत के लिए इस वर्ष कोई एक प्रकार तैय्यार करना है। पीलू, भैरवी, या जोगिया में ठुमरी, दादरा या तत्सम कोई प्रकार प्रादेशिक भाषा में ।

गायन वादन की अंकपत्रिका के कॉलम में 10 अंक राष्ट्रगीत, जनगणमन, वंदेमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना इसके लिए समाविष्ट किये गए हैं।

आ) तालज्ञान :

आड़ाचौताल, दीपचंदी, अध्दा (तीनताल) धुमाली, चाचर अथवा झपताल का संपूर्ण ज्ञान तथा इनको तबले पर बजते हुए पहचानना। सर्वसाधारण ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास। अब तक सीखे हुए तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन बोलने का अभ्यास।

अंकपत्रिका :-

सूचना :- *इस परीक्षा के लिए 50 मिनट का समय निर्धारित किया गया हैं। संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत की जानेवाली विलंबित बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय देकर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाएँ। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नही है।*

इस वर्ष के दो रागों में एक बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ : 13 + 13 अंक। इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिशें, 8 + 8 + 8 अंक।

कुल 50 अंक ।

इस वर्ष के दो रागों में संपूर्ण विस्तार के साथ एक एक बंदिश, 9 + 9 अंक। इस वर्ष के दो रागों में तथा पिछले वर्ष के एक राग में राग वाचक आलाप के साथ बंदिश : 4 + 4 + 4 अंक ।

कुल 30 अंक।

इस वर्ष निर्धारित किये गये रागों में धृपद, धमार या तत्सम गत अथवा तालबद्ध अलंकार ठाह में : 4 अंक । चौगुन में : 5 अंक । तथा तिगुन में : 7 अंक।

कुल 16 अंक।

देशकार – भूपाली, जौनपुरी–दरबारी कानडा, छायानट–कामोद देस–तिलक कामोद इन में से दो राग जोड़ियों की आलाप तानों के साथ तुलना : 24 अंक।

इस वर्ष के रागों में तराना, चतुरंग, त्रिवट, या रूपक, झपताल, एकताल में गत : 10 अंक।

इस वर्ष के तीन तथा पिछले दो रागों के आलाप तथा तान : 20 अंक।

दो तालों के ठेकों को तबले पर बजते हुए पहचानना : 6 अंक।

इस वर्ष के दो तालों की जानकारी तथा ठेकों को ताली खाली दे कर बोलना : 6 अंक।

किसी ताल का ठेका चौगुन, तिगुन, तथा डेढगुन में ताली देकर बोलना : 3 + 4 + 6 अंक । कुल 13 अंक।

पीलू, भैरवी या जोगिया में ठुमरी, दादरा या नाट्य संगीत/वाद्यों पर इस अंग की धुन : 15 अंक।

बंदिश की पंक्ति सुन कर स्वर बोलना तथा लिखना, स्वरलिपि में बोलना तथा लिखना। अथवा राष्ट्रगीत जनगणमन, वन्देमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना : 10 अंक।

मंच प्रदर्शन : 50 अंक।
(इस वर्ष के रागों में से एक राग और उपशास्त्रीय संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति।)
कुल मौखिक : 250 अंक। लिखित : 150 अंक
सर्वयोग : 400 अंक।